विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मंदिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

Contact Info

- 0120-4545608
- WEBSITE: ssmnoida.in
- GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर – 12, नोएडा
मासिक ई-पत्रिका, मार्च – 2026
ज्ञानोदय (अंक-65)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता
श्री प्रदीप भारद्वाज
श्री कृष्ण कुमार बंसल
श्री राजीव नाईक
श्री नितीश आर्य
श्री जितेन्द्र कुमार गौतम
श्री सुशील कुमार

मार्गदर्शक

श्री देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक मंडल

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
श्री दीपक कुमार
श्रीमती तरुणा सक्सेना
ब०अनु सिंह
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- महाराजा विक्रमादित्य
- हनुमान जन्मोत्सव
- विश्व स्वास्थ्य दिवस
- बैसाखी
- भीमराव अम्बेडकर जयंती
- जलियाँवाला बाग हत्याकांड स्मृति दिवस
- विश्व धरोहर दिवस
- विश्व पृथ्वी दिवस
- विश्व पुस्तक दिवस
- परशुराम जयंती
- पंचम के भैया-बहनों का अनुभव कथन
- चैत्र नवरात्र व नव वर्ष
- आशीर्वाद समारोह
- स्वर्ण प्राशन
- परीक्षा परिणाम व पुरस्कार वितरण कार्यक्रम
- बताओ तो जानें
- प्रश्नोत्तरी

संपादकीय

आधुनिकता और भारतीय संस्कृति का समन्वय

आधुनिकता और भारतीय संस्कृति का समन्वय आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आधुनिकता हमें नई सोच, विज्ञान, तकनीक और विकास की दिशा में आगे बढ़ाती है, जबकि भारतीय संस्कृति हमें अपने मूल्यों, परंपराओं और नैतिकता से जोड़े रखती है। यदि हम इन दोनों का सही संतुलन बनाए रखें, तो हम एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं।

आज के दौर में हम मोबाइल, इंटरनेट और नई-नई तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं। यह आधुनिकता का प्रतीक है। इससे हमारा जीवन आसान और तेज़ हो गया है। लेकिन इसके साथ-साथ हमें अपने संस्कार, जैसे बड़ों का सम्मान, सत्य बोलना, और परिवार के साथ समय बिताना, नहीं भूलना चाहिए। यही भारतीय संस्कृति की पहचान है।

भारतीय संस्कृति हमें सिखाती है कि जीवन में सादगी, सहनशीलता और प्रेम का महत्व क्या है। वहीं आधुनिकता हमें आत्मनिर्भर बनना और नए अवसरों को अपनाना सिखाती है। अगर हम केवल आधुनिकता की ओर बढ़ेंगे और अपनी संस्कृति को भूल जाएंगे, तो हमारी पहचान खो सकती है। और अगर हम केवल परंपराओं में ही उलझे रहेंगे, तो हम प्रगति नहीं कर पाएंगे।

इसलिए ज़रूरी है कि हम आधुनिक जीवन शैली को अपनाते हुए अपनी संस्कृति को भी साथ लेकर चलें। जैसे हम आधुनिक कपड़े पहन सकते हैं, लेकिन त्योहारों पर पारंपरिक वेशभूषा अपनाकर अपनी संस्कृति को जीवित रख सकते हैं। इसी तरह, हम अंग्रेज़ी भाषा सीख सकते हैं, लेकिन अपनी मातृभाषा का सम्मान भी बनाए रखें।

अंत में, यही कहा जा सकता है कि आधुनिकता और भारतीय संस्कृति का समन्वय हमें एक संतुलित, सफल और खुशहाल जीवन जीने की राह दिखाता है।

तरुणा सक्सेना
अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)

प्रधानाचार्य जी की कलम से

पंचपदी अधिगम पद्धति

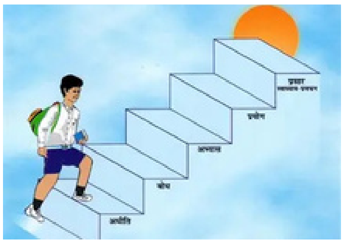

अध्ययन हेतु करणों को व्यवस्थित रूप से नियोजित करने को अध्ययन की पद्धति कहते हैं। इस पद्धति के पाँच पद हैं इसलिए यह पंचपदी शिक्षण पद्धति कहलाती है। ये पाँच पद इस प्रकार हैं- अधीति, बोध, अभ्यास, प्रयोग और प्रसार।

अधीति: कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों से सीखने का प्रयास अधीति है। गुरु का बोला हुआ सुनना, पुस्तक में लिखा हुआ पढ़ना, दोनों ही याद कर पुनः बोलना, दौड़ना, खेलना, रचना करना, देख-देख कर कुछ हाथ से बनाना, देखकर लिखना, याद किया हुआ लिखना, देख कर चित्र बनाना, सुनकर गाना आदि कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों से किया गया अध्ययन है।

बोध: बोध का अर्थ है समझना। यह अन्तःकरण से होता है। मनन करना, चिन्तन करना, विचार करना, अवलोकन करना, परीक्षण करना, अनुमान करना, संश्लेषण-विश्लेषण करना, कार्य-कारण भाव समझना निश्चय करना, निर्णय करना, संस्कार ग्रहण करना आदि रूपों में इन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान को अनुभूति तक पहुँचाना बोध है। यह बड़ा विस्तृत और लगे रहकर साधने वाला कार्य है। अध्ययन का ग्रहण करने वाले अंश ही बोध है।

प्रयोग : जो प्राप्त किया है, जिसका बोध हुआ है वह अध्येता के अपने व्यवहार में और अन्यों के साथ व्यवहार में दिखाई देना चाहिए। अध्येता की वाणी, विचार, व्यवहार, दृष्टि आदि में अध्ययन की झलक चाहिए। ज्ञान यदि व्यवहार में व्यक्त नहीं होता तो वह निरुपयोगी तथा निरर्थक है। उदाहरण के लिए, नाड़ी शुद्धि प्राणायाम का अच्छा अभ्यास हुआ है तो व्यक्ति को देखते ही उसका पता चल जाता है। शरीर हल्का हो जाता है, वाणी मधुर हो जाती है, नेत्र निर्मल हो जाते हैं और चित्त की प्रसन्नता मुख पर झलकती है।

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

महाराजा विक्रमादित्य

जिनके राजतिलक से विक्रम संवत् का श्री गणेश, अपार प्रजा वत्सल, शकारि, परम पराक्रमी

आज से 2080 वर्ष पूर्व भारत पूर्ण वैभव पर था, धन-धान्य से भरपूर था, देश में किसी वस्तु का अभाव न था। लोग चोरी नहीं करते थे और न घूसखोरी, बेईमानी, भ्रष्टाचार था। वह भारत का स्वर्ण युग था। उसी समय महान चक्रवर्ती सम्राट महाराज भर्तृहरि ने युवावस्था में ही राजपाट छोड़कर संन्यास धारण कर लिया। उनके साथ प्रजाजनों में कुछ लोग संन्यासी हो गए। जिनके वंशज आज भी गेरुआ वस्त्र पहनकर सारंग बजाकर रानी शामदेवा की विरह-वेदना के गीत गाकर भिक्षाटन करते गांवों में देखे जा सकते हैं। जिन्हें लोग जोगी बाबा के नाम से जानते हैं। गोवंश विकास परिरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए सूर्यवंशी (रघुवंशी) भगवान राम के पूर्वजों ने एक विशाल प्रयोगशाला गोरक्षपीठाधीश्वर के नाम से स्थापित की थी वही आज की गोरक्षपुर (गोरखपुर) नामक नगरी है जिसके तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश थे महान ऋषि मोक्षेन्द्रनाथ (जितेन्द्रिय)। महाराज भर्तृहरि सन्यासी बन गए। फलतः उनके लघुभ्राता महाराज विक्रमादित्य (सूर्यवंशी) गद्दी पर बैठे। जिस दिन उनका राजतिलक हुआ वह चैत्र शुक्ल 1 वर्ष प्रतिपदा का पावन दिवस था। उसी दिन से विक्रम संवत् का शुभारम्भ हुआ।

यह संवत् कलि संवत् के 3044 वर्ष बाद तथा शाके शालिवाहन संवत् के 135 वर्ष पूर्व तथा सन ईसवी के 57 वर्ष पूर्व हुआ था। सम्राट विक्रमादित्य ने 35 वर्ष राज किया। वे अत्यन्त वीर पराक्रमी यशस्वी प्रजापालक और प्रकाण्ड विद्वान थे। वे गोवंश विशेषज्ञ और महान कृषि वैज्ञानिक थे। उनके शासन में कोई राजा नहीं बन सकता था - यदि वह हल चलाना न जानता हो। उनके राज्य में ओलावृष्टि आदि प्राकृतिक प्रकोप नहीं होता था। बादलों में जमी बर्फ को वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा पिघलाकर वर्षा कराने की क्षमता प्राप्त कर ली थी।

कहते हैं, कि सम्राट विक्रमादित्य मुस्कुरा दें तो घटाएं घिर आएं और खिलखिलाकर हंस पड़ें तो घनघोर वर्षा होने लगे। उनके नवरत्नों (मंत्रिपरिषद) में घाघ-भड्डुरी और कालिदास जैसे कृषि विशेषज्ञ और प्रकाण्ड विद्वान थे।

सम्राट विक्रमादित्य के राज्य में गोवंश और कृषि का तेजी से विकास हुआ जिससे देश की उर्वरा वसुन्धरा धन-धान्य परिपूर्ण हो गई और प्रजा (जनता) सुखी-सम्पन्न बन गई। उन्होंने कश्मीर से कन्या कुमारी और हिन्दुकुश से ब्रहमदेश तक्र समूचे विशाल बृहत्तर भारत को एकता के सूत्र में पिरोकर शक्तिशाली अखण्ड राष्ट्र खड़ा कर दिया।

सम्राट विक्रमादित्य ने रामराज्य काल में स्थापित किए गए 12 ज्योतिर्लिंगो का पुनरुद्धार कराया और इनमें से श्रेष्ठ महाकालेश्वर (उज्जैन) और सोमनाथ मन्दिर (सौराष्ट्र) का पुनर्निर्माण कराकर प्रभासपाटन (प्रभास क्षेत्र) में लोलार्क आश्रम (सौर ऊर्जा की विशाल प्रयोगशाला) की पुनः स्थापन कराई । भगवान श्रीराम के पुत्र कुश द्वारा 1 लाख 26 हजार वर्ष पूर्व रामराज्य की स्थापना की स्मृति में अयोध्या में भगवान श्रीराम के जन्मस्थान (गर्भगृह) पर स्थापित विशाल राम मन्दिर का पुनर्निर्माण कराया ।

विक्रम संवत् उस स्वर्ण युग के गौरवमय इतिहास की पावन स्मृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन मनाया जाता है। सम्राट विक्रमादित्य के समय कृषि और गोवंश विकास के साथ सौर ऊर्जा आदि सभी प्रकार के विज्ञान का विकास हुआ। मुम्बई से 13 किमी. पूर्व सागर के मध्य एक टापू है जिसे आजकल एलीफैण्टा गुफा के नाम से पयर्टनस्थल के रूप में जाना जाता है। उस टापू की चोटी पर एक विशल तोप रखी है। तोप इतनी विशाल है कि उसके अन्दर लेटकर मोटा आदमी भी आर-पार जा सकता है। उस तोप की मार 20 योजन (एक योजन 14 किमी.) तक है। उस काल में समुद्री दस्युओं और विदेशी शक हूण यवन हमलावरों से देश की सीमा सुरक्षा के लिए सम्राट विक्रमादित्य ने विशाल तोप का निर्माण कराया था जिसमें आज तक जंग नहीं लगी। उनके शासनकाल के स्वर्ण युग की स्मृति में भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी और अनुकरणीय उदाहरण दुनिया के सामने प्रस्तुत है। समस्त कर्ज राजकोष से चुकता करने के बाद नवरवो (मंत्रिपरिषद) की मंत्रणा से ज्योतिषियों से परामर्श कर प्रयाग राज में वात्स्यायन भारद्वाज की अध्यक्षता में धर्मसभा (धर्म संसद) ने चैत्र शुक्ल 1 वर्ष प्रतिपदा के दिन से सम्राट विक्रमादित्य को अपने नाम को सवंत्सर चलाने का अधिकार दिया था ।

कमल कुमार (संयोजक)
भारतीय शिक्षा परिषद
नेहरू नगर - गाजियावद

हनुमान जन्मोत्सव

हनुमान जन्मोत्सव, जिसे हनुमान जयंती कहा जाता है, हिंदू धर्म का एक प्रमुख और पवित्र पर्व है। यह दिन भगवान हनुमान के जन्मदिन के रूप में बड़े उत्साह और श्रद्धा से मनाया जाता है। हनुमान जी शक्ति, भक्ति, साहस और सेवा के प्रतीक माने जाते हैं। हनुमान जी का जन्म अंजनी माता और केसरी के यहाँ हुआ था।

उन्हें पवन देव का पुत्र भी माना जाता है, इसलिए उन्हें पवनपुत्र कहा जाता है। उन्होंने भगवान राम की सेवा में अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

इस पावन अवसर पर भक्तगण मन्दिरों में जाकर पूजा-अर्चना करते हैं, व्रत रखते हैं और हनुमान चालीसा तथा सुंदरकांड का पाठ करते हैं। जगह-जगह भंडारे और शोभायात्राएं निकाली जाती हैं।

दोहा 1:-

"जय हनुमान ज्ञान गुण सागर,
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।"

यह दोहा हनुमान जी की बुद्धि, गुण और उनकी महिमा का वर्णन करता है।

दोहा 2:-

"राम दूत अतुलित बल धामा,
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।"

इस दोहे में हनुमान जी को राम के दूत और अपार बल के स्वामी बताया गया है।

दोहा 3:-

"भूत पिशाच निकट नहीं आवे,
महावीर जब नाम सुनावे।"

यह दोहा बताता है कि हनुमान जी का नाम लेने से भय और नकारात्मक शक्तियाँ दूर हो जाती हैं।

महत्व:- हनुमान जन्मोत्सव हमें सिखाता है कि हमें हनुमान जी की तरह साहसी, निष्ठावान और विनम्र बनना चाहिए। हमें अपने जीवन में सेवा और भक्ति का मार्ग अपनाना चाहिए हनुमान जन्मोत्सव हमें प्रेरणा देता है कि हम सच्चाई, परिश्रम और विश्वास के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करें। यह पर्व हमें शक्ति और आत्मविश्वास प्रदान करता है।

राजेन्द्र प्रसाद (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व स्वास्थ्य दिवस

पहला सुख निरोगी काया"—यह कहावत सदियों से हमारे समाज का हिस्सा रही है, लेकिन आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हम इसे भूलते जा रहे हैं। हर साल 7 अप्रैल को पूरी दुनिया में 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना और समाज के हर वर्ग तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की स्थापना 7 अप्रैल 1948 को हुई थी। इसी दिन की याद में 1950 से हर साल यह दिवस मनाया जाता है। हर वर्ष WHO एक विशेष 'थीम' निर्धारित करता है, जो दुनिया की वर्तमान स्वास्थ्य चुनौतियों (जैसे मानसिक स्वास्थ्य, स्वच्छता, या महामारी) पर आधारित होती है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि स्वास्थ्य केवल बीमारियों की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्ण स्वस्थ होने की स्थिति है।

इस दिवस का महत्व:-

1. जन जागरूकता: आम लोगों को घातक बीमारियों और उनसे बचाव के प्रति जागरूक करना।
2. समान स्वास्थ्य अधिकार: यह सुनिश्चित करना कि स्वास्थ्य सुविधाएं केवल अमीरों तक सीमित न रहकर समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुँचे।
3. नीति निर्धारण: विभिन्न देशों की सरकारों को स्वास्थ्य बजट बढ़ाने और स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत करने के लिए प्रेरित करना।
4. वैश्विक एकता: महामारी जैसी स्थितियों में देशों के बीच सहयोग की भावना विकसित करना।

आज की चुनौतियाँ:- आधुनिक युग में तकनीक ने जहाँ हमें सुविधाएँ दी हैं, वहीं शारीरिक निष्क्रियता भी बढ़ा दी है। खराब जीवनशैली, जंक फूड का सेवन, तनाव और प्रदूषण के कारण हृदय रोग, मधुमेह और अवसाद जैसी समस्याएँ आम हो गई हैं। विश्व स्वास्थ्य दिवस हमें रुककर अपनी आदतों पर विचार करने का अवसर देता है।

आज के युग में विज्ञान ने बहुत प्रगति की है, फिर भी हमारे सामने कई गंभीर चुनौतियाँ हैं:

- **प्रदूषण:** वायु और जल प्रदूषण श्वसन और त्वचा संबंधी रोगों का मुख्य कारण हैं।
- **जीवनशैली:** घंटों बैठकर काम करना और डिजिटल स्क्रीन का अत्यधिक प्रयोग हमारी आंखों और रीढ़ की हड्डी के लिए खतरा है।
- **एंटीबायोटिक प्रतिरोध:** दवाओं का अंधाधुंध इस्तेमाल बैक्टीरिया को और भी शक्तिशाली बना रहा है, जिससे सामान्य इलाज भी कठिन हो रहा है।
- **स्वास्थ्य असमानता:** आज भी दुनिया की एक बड़ी आबादी बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित है।

हम क्या कर सकते हैं?

एक स्वस्थ जीवन जीने के लिए हमें अपने दैनिक जीवन में छोटे-छोटे लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव करने चाहिए:

आहार - घर का बना ताजा भोजन लें, चीनी और नमक का सेवन कम करें।

व्यायाम - प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट योग, पैदल चलना या व्यायाम करें।

नींद - शरीर को रिकवर करने के लिए 7-8 घंटे की गहरी नींद लें।

जल - शरीर को हाइड्रेटेड रखने के लिए पर्याप्त पानी पिएं।

मानसिक शांति - ध्यान (Meditation) करें और अपनी पसंद के कार्यों के लिए समय निकालें।

धर्मेंद्र कुमार (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

बैसाखी

ਆਇਆ ਦਿਨ ਵਿਸਾਖੀ ਦਾ , ਸਮਾਂ ਗਇਆ ਕਣਕਾਂ ਦੀ ਰਾਖੀ ਦਾ
ਹੁਣ ਚਾਈਂ-ਚਾਈਂ ਮੇਲੇ ਨੂੰ ਜਾਵਾਂਗੇ ਗਿੱਧਾ-ਭੰਗੜਾ ਪਾ ਕੇ ਜਸ਼ਨ ਮਨਾਵਾਂਗੇ।।

बैसाखी भारतवर्ष का एक प्रमुख और पवित्र त्योहार है, जिसे विशेष रूप से पंजाब और उत्तर भारत में बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। बैसाखी के दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, इस कारण इस दिन को 'मेष संक्रांति' भी कहते हैं। बैसाखी का त्योहार पारंपरिक रूप से प्रत्येक वर्ष 13 या 14 अप्रैल को मनाया जाता है। यह त्योहार हिंदुओं,बौद्ध और सिखों के लिए विशेष महत्व रखता है। इस दिन हिंदू धर्मावलंबी पवित्र स्नान के लिए गंगा किनारे एकत्रित होते हैं तथा इस पर्व को मनाते हैं।

केरल में यह त्योहार 'विशु' कहलाता है, उत्तराखंड के 'बिखोती महोत्सव' में लोगों की पवित्र नदियों में डुबकी लगाने की परंपरा है। असम में यह बोहाग- बिहू या रंगली बिहू के रूप में मनाया जाता है। उड़ीसा में यह 'महाविषुव संक्रांति समारोह' के रूप में मनाया जाता है, जिसमें लोक और शास्त्रीय नृत्य शामिल होते हैं। इसके अतिरिक्त बंगाल में यह 'पोहेला बैशाख' तमिल में 'पुत्थांडु' और बिहार में 'जुड़शीतल' के रूप में यह त्योहार मनाया जाता है।

बैसाखी का संबंध सिख धर्म में बहुत गहराई से जुड़ा है। सन् 1699 में इस दिन सिखों के दसवें गुरु गोबिन्द सिंह जी ने 'खालसा पंथ' की स्थापना की थी तथा सिखों को एकजुट किया, इसी कारण बैसाखी सिखों के लिए एक धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व का दिन है। इस दिन गुरुद्वारों में विशेष कीर्तन, अरदास और लंगर का आयोजन किया जाता है।

कृषि के दृष्टिकोण से भी बैसाखी का बहुत महत्व है। यह रबी की फसल के पकने का समय होता है। खासकर गेहूं की फसल, किसान इस दिन अपनी मेहनत का फल पाकर खुशी मनाते हैं पंजाब में इस दिन भांगड़ा और गिद्धा जैसे लोक नृत्य किए जाते हैं।
यह पर्व हमें न केवल कृषि और प्रकृति के महत्व को समझाता है, बल्कि हमें एकता,प्रेम और नई शुरुआत का संदेश भी देता है।यह समय है ईश्वर का धन्यवाद करने का, परिवार के साथ खुशियां बांटने का और अपने रीति-रिवाज को गर्व के साथ अपनाने का।

रजनी शर्मा (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

भीमराव अम्बेडकर जयंती

डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती 14 अप्रैल भारतीय संविधान के जनक बाबा साहेब अंबेडकर जयंती है जो सामाजिक समानता और न्याय का प्रतीक है यह दिन दलित महिलाओं और श्रमिकों के अधिकारों के लिए उनके संघर्ष और राष्ट्र निर्माण के योगदान को याद करते हुए देश भर में उत्सव और सम्मान के साथ मनाया जाता है।

📘 समानता और शिक्षा में अधिकारों का महत्व

समानता (Equality) और शिक्षा (Education) दोनों ही एक अच्छे समाज की नींव हैं। जब हर व्यक्ति को बराबरी का अधिकार और शिक्षा का अवसर मिलता है, तभी समाज का सही विकास संभव होता है।

1. समानता का महत्व

- समानता का मतलब है कि सभी लोगों को बिना भेदभाव (जाति, धर्म, लिंग आदि) के बराबर अधिकार मिलें।
- इससे समाज में न्याय (Justice) और शांति बनी रहती है।
- कमजोर और पिछड़े वर्गों को भी आगे बढ़ने का मौका मिलता है।

2. शिक्षा में अधिकारों का महत्व

- शिक्षा का अधिकार हर बच्चे का मूल अधिकार है।
- के अनुसार 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य है।
- शिक्षा से व्यक्ति को ज्ञान, समझ और सही-गलत की पहचान होती है।
- यह आत्मनिर्भर (Self-reliant) बनने में मदद करती है।

3. समानता और शिक्षा का संबंध

- शिक्षा से लोगों में समानता की भावना विकसित होती है।
- जब सभी को शिक्षा मिलेगी, तो भेदभाव कम होगा।
- शिक्षित समाज में लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझते हैं।

4. समाज के विकास में योगदान

- समानता और शिक्षा से गरीबी और बेरोजगारी कम होती है।
- देश का आर्थिक और सामाजिक विकास तेज होता है।
- लोकतंत्र मजबूत बनता है।

निष्कर्ष

समानता और शिक्षा के अधिकार एक-दूसरे के पूरक हैं। अगर हर व्यक्ति को समान अवसर और शिक्षा मिले, तो समाज अधिक न्यायपूर्ण, विकसित और खुशहाल बन सकता है।

राखी यादव (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

जलियाँवाला बाग हत्याकांड स्मृति दिवस

13 अप्रैल 1919 का दिन भारतीय इतिहास में एक अत्यंत दुखद घटना के रूप में याद किया जाता है। इस दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में भयानक हत्याकांड हुआ, जिसने पूरे देश को हिला कर रख दिया। बैसाखी के अवसर पर हजारों लोग वहां एक शांतिपूर्ण सभा के लिए एकत्र हुए थे।

उस समय अंग्रेजी शासन के खिलाफ लोगों में असंतोष बढ़ रहा था, विशेषकर रॉलेट एक्ट जैसे कठोर कानूनों के कारण, जिनके तहत बिना मुकदमे के गिरफ्तारी संभव थी। लोग इसी अन्याय के विरोध में जलियांवाला बाग में इकट्ठा हुए थे। यह स्थान चारों ओर से दीवारों से घिरा हुआ था और बाहर निकलने के रास्ते बहुत कम और संकरे थे।

इसी दौरान जनरल डायर अपने सैनिकों के साथ वहां पहुंचा और बिना किसी चेतावनी के भीड़ पर गोलियां चलाने का आदेश दे दिया। सैनिकों ने कई मिनट तक लगातार फायरिंग की। लोग बचने के लिए इधर-उधर भागे, लेकिन रास्ते संकरे होने के कारण निकल नहीं सके। कई लोग जान बचाने के लिए कुएं में कूद गए। इस निर्मम घटना में सैकड़ों लोग मारे गए और हजारों घायल हुए।

इस हत्याकांड ने पूरे देश में गहरा आक्रोश पैदा कर दिया। लोगों के मन में अंग्रेजी शासन के प्रति विरोध और तेज हो गया। महात्मा गांधी ने इसके बाद असहयोग आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा मिली। हालांकि हंटर आयोग का गठन किया गया, लेकिन पीड़ितों को न्याय नहीं मिला।

बाद में उधम सिंह ने 1940 में लंदन जाकर माइकल ओ'डायर की हत्या कर इस घटना का बदला लिया। आज जलियांवाला बाग एक राष्ट्रीय स्मारक है, जो हमें शहीदों के बलिदान और स्वतंत्रता के महत्व की याद दिलाता है। यह घटना हमें सिखाती है कि हमें हमेशा अन्याय के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए और अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना चाहिए।

चेतना दुबे (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व धरोहर दिवस

किसी भी देश के लिए उसकी धरोहर या विरासत वह होती है, जो उसके अतीत और गौरव गाथा को बयां करती हो | विश्व धरोहर दिवस दुनिया भर की ऐतिहासिक सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहरों को समर्पित है | यह दिन हर साल 18 अप्रैल के दिन मनाया जाता है | इस दिन को विश्व धरोहर दिवस के साथ ही अंतरराष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल दिवस जैसे नाम से भी पुकारा जाता है | विश्व भर में ऐसी कई धरोहर हैं , जो आज की पीढ़ी और इससे पिछली और उससे भी पिछली पीढ़ी के जन्म से पहले से मौजूद हैं | इन धरोहरों की रक्षा करने के लिए और आने वाली पीढियों के लिए इन्हें संजोकर रखने के लिए विश्व धरोहर दिवस मनाया जाता है | ताजमहल , हंपी , द ग्रेट वॉल ऑफ चाइना , एक्रोपोलिस आफ एथेंस और द पिरामिड ऑफ़ गीजा विश्व धरोहर है |यह धरोहर अतीत की पहचान ही नहीं है बल्कि पर्यटन और सांस्कृतिक शिक्षा का आधार भी बन गई है | बहुत से देश की अर्थव्यवस्था संभालने में भी इन धरोहरों की विशेष भूमिका है| हर साल विश्व धरोहर दिवस 18 अप्रैल को मनाया जाता है इस दिन को मनाने की शुरुआत विश्व स्मारक दिवस के तौर पर हुई थी हालांकि बाद में यूनेस्को ने इसको विश्व धरोहर दिवस के रूप में बदल दिया | विश्व धरोहर दिवस का इतिहास - पहली बार 1968 में एक अंतरराष्ट्रीय संगठन ने विश्व की सभी प्रसिद्ध इमारतो और प्राकृतिक स्थलों की सुरक्षा का प्रस्ताव रखा था | जिसे स्टॉकहोम में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में पारित किया गया बाद में यूनेस्को वर्ल्ड हेरीटेज सेंटर की स्थापना हुई तो 18 अप्रैल 1978 में विश्व स्मारक दिवस मनाने की शुरुआत की गई |

विश्व धरोहर दिवस 2025 की थीम - हर साल इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ़ मोनुमेंट्स एंड स्टेस विश्व धरोहर दिवस के लिए एक थीम चुनती है| साल 2025 में विश्व धरोहर दिवस की थीम “आपदा और संघर्ष प्रतिरोधी विरासत” थी| इस थीम का मतलब है प्राकृतिक आपदाओं से इन धरोहरों को बचाने की तरफ कदम उठाना तैयारी करना और इनसे सीख लेना | इस वर्ष 2026 में विश्व धरोहर दिवस की मुख्य थीम “विरासत स्थलों पर आपदा और संघर्ष का संकट” है |यह थीम आपदाओं और संघर्षों के दौरान सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण और सुरक्षा पर केंद्रित है |

उद्देश्य - इस थीम के माध्यम से दुनिया भर में विरासत स्थलों को सुरक्षित रखने के लिए तैयारी को मजबूत करने और सांस्कृतिक विरासत के लिए खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया गया है |

अरुणिमा श्रीवास्तव (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व पृथ्वी दिवस

विश्व पृथ्वी दिवस हर वर्ष 22 अप्रैल को पूरे विश्व में मनाया जाता है। यह दिन हमें हमारी धरती के महत्व और उसके संरक्षण की जिम्मेदारी का एहसास कराता है। पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन संभव है, इसलिए इसे सुरक्षित रखना हम सभी का प्रथम कर्तव्य है।

आज के समय में पर्यावरण अनेक गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है, जैसे वायु और जल प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, वनों की अंधाधुंध कटाई और जैव विविधता का नाश। इन कारणों से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है, जिसका सीधा प्रभाव मानव जीवन पर पड़ रहा है। यदि समय रहते इन समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया गया, तो भविष्य में इसके परिणाम और भी भयावह हो सकते हैं।

पृथ्वी दिवस हमें यह सिखाता है कि छोटे-छोटे प्रयास भी बड़े बदलाव ला सकते हैं। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए, जल और बिजली की बचत करनी चाहिए, प्लास्टिक के उपयोग को कम करना चाहिए और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। साथ ही, हमें दूसरों को भी पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करना चाहिए।

इस दिन स्कूलों, कॉलेजों और विभिन्न संस्थाओं में जागरूकता कार्यक्रम, वृक्षारोपण अभियान और रैलियाँ आयोजित की जाती हैं, ताकि लोग पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनें। यह केवल एक दिन का कार्यक्रम नहीं, बल्कि जीवनभर अपनाने वाली आदत है।

अंत में, हमें यह समझना होगा कि "पृथ्वी है तो हम हैं।" यदि हम अपनी धरती की रक्षा करेंगे, तो वह भी हमें सुरक्षित, स्वस्थ और खुशहाल जीवन प्रदान करेगी। आइए, हम सभी मिलकर संकल्प लें कि अपनी पृथ्वी को स्वच्छ, हरी-भरी और सुरक्षित बनाएँगे।

प्रमोद कुमार (कार्यालय सहायक)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व पुस्तक दिवस

पुस्तकें मानव जीवन की सबसे बड़ी धरोहर हैं। वे केवल कागज़ और शब्दों का संग्रह नहीं होतीं, बल्कि ज्ञान, अनुभव, संस्कृति और विचारों का भंडार होती हैं। मनुष्य के जीवन में पुस्तकें उतनी ही आवश्यक हैं जितना भोजन, जल और वायु। एक अच्छी पुस्तक व्यक्ति को सही मार्ग दिखाती है, उसके विचारों को विकसित करती है और जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। इसी महत्व को समझते हुए प्रत्येक वर्ष 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक दिवस मनाया जाता है। विश्व पुस्तक दिवस की शुरुआत वर्ष 1995 में यूनेस्को द्वारा की गई थी। इसका उद्देश्य लोगों में पुस्तक पढ़ने की आदत को बढ़ावा देना, लेखकों का सम्मान करना और ज्ञान के महत्व को समझाना है। 23 अप्रैल का दिन इसलिए चुना गया क्योंकि इस दिन विश्व के कई महान साहित्यकारों का जन्म या निधन हुआ था। इनमें विलियम शेक्सपियर, मिगेल दे सर्वेटीस और इंका गार्सिलासो दे ला वेगा प्रमुख हैं। एक शिक्षक के रूप में मेरा यह मानना है कि पुस्तकें विद्यार्थियों की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। वे कभी शिकायत नहीं करतीं, कभी थकती नहीं और हर समय हमें कुछ नया सिखाने के लिए तैयार रहती हैं। पुस्तकें हमें केवल परीक्षा में अच्छे अंक लाने में मदद नहीं करतीं, बल्कि वे हमारे चरित्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अच्छी पुस्तकें हमें सत्य, ईमानदारी, अनुशासन, दया और मेहनत जैसे गुणों की शिक्षा देतीहैं।
आज के आधुनिक युग में मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। बच्चे अपना अधिक समय स्क्रीन पर बिताने लगे हैं, जिसके कारण पुस्तकों से उनका जुड़ाव कम हो रहा है।यह एक चिंताजनक स्थितिहै। तकनीक का उपयोग आवश्यक है, लेकिन पुस्तकों का स्थान कोई भी साधन नहीं ले सकता। पुस्तकें पढ़ने से हमारी भाषा सुधरती है, सोचने की शक्ति बढ़ती है, कल्पनाशक्ति विकसित होती है और मनको शांति मिलती है।

विद्यालयों में पुस्तकालय का विशेष महत्व होता है। एक समृद्ध पुस्तकालय विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध कराता है। कहानी, कविता, विज्ञान, इतिहास, जीवनी, धर्म, सामान्य ज्ञान और प्रेरणादायक पुस्तकों को पढ़कर विद्यार्थी अपने ज्ञान को बढ़ा सकते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी को प्रतिदिन कुछ समय पुस्तक पढ़ने के लिए अवश्य निकालना चाहिए। यदि हम बचपन से ही पढ़ने की आदत विकसित कर लें, तो जीवन भर उसका लाभ मिलता है। विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर विद्यालयों में पुस्तक प्रदर्शनी, पुस्तक मेले, वाचन प्रतियोगिता, कहानी लेखन, कविता पाठ और पुस्तक समीक्षा जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं।इससे विद्यार्थियों में पढ़ने के प्रति रुचि बढ़ती है और वे पुस्तकों के महत्व को समझते हैं। अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि पुस्तकें ज्ञान का प्रकाश हैं। वे हमें अज्ञानता के अंधकार से निकालकर सफलता और सभ्यता की ओर ले जाती हैं। इसलिए हमें पुस्तकों से प्रेम करना चाहिए, उन्हें अपना मित्र बनाना चाहिए और प्रतिदिन पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। यही विश्व पुस्तक दिवस का वास्तविक उद्देश्य है।

मीनू रानी (लाइब्रेरियन)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

परशुराम जयंती

भगवान परशुराम, विष्णु के छठे अवतार, ऋषि जमदग्नि और माता रेणुका के पुत्र थे, जिन्हें भगवान शिव ने 'परशु' (फरसा) अस्त्र प्रदान किया था। न्याय, तेज और पितृभक्ति के प्रतीक परशुराम ने अहंकारी क्षत्रियों के अत्याचार से पृथ्वी को 21 बार मुक्त किया। चिरंजीवी (अमर) माने जाने वाले परशुराम योद्धा और तपस्वी दोनों रूप में पूजनीय हैं।

भगवान परशुराम :- तेज और न्याय के प्रतीक भगवान परशुराम सनातन धर्म के एक प्रमुख और शक्तिशाली अवतार हैं। उनका जन्म वैशाख शुक्ल तृतीया (परशुराम जयंती) को भृगुवंशीय ऋषि जमदग्नि और माता रेणुका के घर हुआ था। बचपन में उनका नाम 'राम' था, लेकिन भगवान शिव की कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर उन्हें अमोघ 'परशु' प्राप्त हुआ, जिसके बाद वे परशुराम कहलाए।

जीवन और शिक्षा -परशुराम का जीवन ब्राह्मण कुल में जन्म लेने के बावजूद एक महान योद्धा और ऋषि की तरह बीता। वे पितृभक्त थे और उन्होंने अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए अपनी माता का वध भी किया था, लेकिन बाद में पिता से उन्हें पुनर्जीवित करने का वरदान भी मांगा। उन्होंने स्वयं भगवान शिव से युद्धकला और अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्राप्त की थी।

धर्म स्थापना और संघर्ष:- जब हैहयवंशी क्षत्रिय राजा सहस्रार्जुन ने उनके पिता जमदग्नि की हत्या कर दी, तब परशुराम ने दुष्ट क्षत्रियों के विनाश का संकल्प लिया। उन्होंने 21 बार पृथ्वी से अत्याचारी क्षत्रियों का संहार किया और अधर्म को मिटाकर धर्म की पुनः स्थापना की। उन्होंने अपना सारा साम्राज्य ऋषि कश्यप को दान कर दिया।

चिरंजीवी परशुराम:- पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान परशुराम को 'चिरंजीवी' (अमर) माना गया है। वे रामायण और महाभारत दोनों कालों में उपस्थित थे। उन्होंने राम को शिव धनुष तोड़ने के बाद और महाभारत काल में कर्ण को शिक्षा दी थी।

अंतिम समय:- समस्त पृथ्वी का भार कम करने और धर्म की स्थापना करने के बाद, उन्होंने महेंद्र पर्वत पर तपस्या की और आज भी वे महेंद्रगिरि पर निवास करते हैं। भगवान परशुराम का जीवन अन्याय के खिलाफ खड़े होने और न्याय व मर्यादा की रक्षा करने की प्रेरणा देता है।

किरण सिंह (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

पंचम के भैया बहनों का अनुभव कथन

कहते हैं, विद्यालय मंदिर है। मेरे लिए यह मंदिर से कम नहीं। इस विद्यालय से मेरी बहुत यादें जुड़ी हैं - भाषण देना, प्रतियोगिता में जाना, अपने आचार्य/आचार्या से मार्गदर्शन होना, उनसे नयी-नयी चीजें सीखना, अपने संस्कारों से ओत-प्रोत होना। इस विद्यालय की खासियत है। इस विद्यालय में आना मेरा सपना था और आज ये सपना पूरा हो चुका है। सरस्वती शिशु मंदिर के बारे में जितना कहा जाये उतना कम है।

धन्यवाद!

रिषु मिश्रा
सरस्वती शिशु मंदिर
पंचम 'अ'

सरस्वती शिशु मंदिर, इस स्कूल ने मुझे हर वो चीज सिखाई जो मुझे पहले नहीं आती थी। इस स्कूल में मैंने बहुत अलग - अलग परीक्षाएं दी हैं। अलग-अलग प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया है। मैंने पढ़ाई के साथ में बहुत सारे लक्ष्य प्राप्त किए हैं। मुझे कक्षा पंचम में शिशु भारती की अध्यक्षा बनाया गया तथा इसके लिए मैं स्कूल के धन्यवाद देती हूँ। इस स्कूल में मैंने बहुत सारे विषयों पर अपने विचार रखे हैं जिनका सम्मान किया गया। इस स्कूल के आचार्यगण एवं अन्य कर्मचारी सभी बहुत अच्छे हैं। खासकर के हम जो कक्षा में अध्यापक मिले बहुत अच्छे मिले, उन्होंने हमारा बहुत ध्यान रखा। इस स्कूल के पुराने प्रधानाचार्य श्रीमान प्रकाशवीर जी एवं वर्तमान प्रधानाचार्य श्रीमान देवेंद्र कुमार सर जी भी बहुत अच्छे हैं। इस स्कूल में लगभग सारी सुविधाएं हैं जो एक छात्र को चाहिए होती हैं। जैसे बड़े-बड़े कक्ष हैं, खेल कूद का मैदान है, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए सभागार है, विज्ञान एवं कंप्यूटर कक्ष हैं इत्यादि चीजें हैं। इस विद्यालय के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है।

धन्यवाद!

जीविशा जायसवाल
सरस्वती शिशु मंदिर
पंचम 'अ'

हर सुबह सरस्वती वंदना के साथ दिन की शुरुआत, अब कहाँ मिलेगी इस बात की सोच। वो असेंबली का अनुशासन और लंच ब्रेक का शोर, अब नई मंजिल की ओर। स्कूल का यूनिफॉर्म और कंधों पर बस्ता, यही था मेरा बचपन का खूबसूरत रास्ता। शिक्षक नहीं, यहाँ मार्गदर्शक मिले, जिनकी वजह से आज हम इतने काबिल बने। जहाँ "नमस्ते" सिर्फ एक शब्द नहीं, हमारी पहचान थी। शुक्रिया शिशु मंदिर। SSM (सरस्वती शिशु मंदिर) सिर्फ स्कूल नहीं, एक भावना है जो हमेशा मेरे दिल में रहेगी। बचपन के 5 साल और अनगिनत यादें, अलविदा कहना आसान नहीं है। प्राथमिक स्कूल का सफर पूरा हुआ, अब नई उड़ान की बारी है। शिशु मंदिर में मिला ज्ञान और संस्कार, अब हर चुनौती के लिए हैं तैयार। SSM, C-41, Sec-12, नोएडा से विदा ले रहे हैं, पर यादें साथ ले जा रहे हैं।

शिवांश मिश्रा
सरस्वती शिशु मंदिर
पंचम 'ब'

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा C-41 सेक्टर-12, मेरा विद्यालय मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विद्यालय में मुझे पढ़ाई के साथ-साथ अनुशासन भी सिखाया जाता है। मेरे शिक्षक बहुत अच्छे और सहायक हैं। विद्यालय का वातावरण बहुत स्वच्छ और शांत है। विद्यालय में खेल-कूद और अन्य गतिविधियां भी होती हैं। यहाँ मुझे नई-नई चीजें सीखने को मिलती हैं। विद्यालय मुझे एक अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा देता है। मुझे अपने विद्यालय पर गर्व है।

रिद्धि कुमारी
सरस्वती शिशु मंदिर
पंचम 'ब'

So firstly, I am thanking you for giving me this opportunity, my topic is WHY MY SCHOOL IS BEST FROM OTHERS. because in my school we focus on MANNERS and DISCIPLINE. Not always only studies, we do many activities, many trips, our principal sir invite many patriots to our school, that from we get manner and inspired from them. In My School we can't believe in difference between dharma, We believe in all dharms and all casts. I am reading from 2022 and I am so happy to read in this school but , now I am leaving this school because , my school is a junior school in which classes are NURSERY to 5th and now I am leaving this school and I am so happy to read in this school but , some students can't focus on studiea and fights so , pls become more strict and take actions same time .

Nishank Chaudhary
5th D

My school is a fantastic place that combines academic excellence with a nurturing environment, making learning fun and engaging. The teachers are incredibly supportive, dedicated, and always willing to go the extra mile to help us succeed. Beyond academics, the vibrant extracurricular activities and welcoming atmosphere allow us to grow personally and build lifelong friendships. I am proud to be a student at **Saraswati Shishu Mandir** which has truly become a second home to me. The teachers don't just teach, but inspire us to think creatively and aim high, as mentioned above. The supportive atmosphere helps us overcome challenges, while the variety of clubs and sports keeps us motivated and well-rounded. I will always cherish the friendships and lessons I learned here. Specially, the thing I like most about my school is the morning prayer. **"Saraswati Vandana"** is one of my favourite prayers. I like this school very much.

Yashasvi
5th D

मेरा स्कूल मेरे लिए शिक्षा का मंदिर है। यहाँ के शिक्षक केवल पढ़ते नहीं बल्कि हम बच्चों को प्रेरित भी करते हैं। पाँचवी कक्षा में मैने ज्ञान तो प्राप्त किया ही है साथ में नई नई चीजें भी सीखी है। जो मेरे लिए बहुत मजेदार रही। मुझे विज्ञान प्रयोगशाला में प्रयोग करना और पुस्तकालय में किताबें पढ़ना बहुत पंसद आया।

अनुशासन :- हमारा स्कूल हमें अनुशासन सिखाता है। जो हमारे जीवन में बहुत काम आएगा।

शिक्षक : - यहाँ के शिक्षक दयालु, मददगार और मार्गदर्शक है।

माहौल : यहाँ का माहौल सकारात्मक, मनोरंजक और सीखाने वाला है। मेरे स्कूल की यादें और मेरे शिक्षक, जिन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया, हमेशा मेरे साथ रहेंगे। मुझे अपने स्कूल का हिस्सा होने पर गर्व है।

यादें :- दोस्तों के साथ मस्ती और प्रतियोगिताएँ और शिक्षकों का प्यार ये सभी यादें हैं।

पूर्वी सिंह
सरस्वती शिशु मंदिर
पंचम 'ई'

आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय, सम्मानित शिक्षकगण एवं मेरे प्यारे साथियों, आप सभी को मेरा सादर प्रणाम।

मेरा नाम सान्वी है और मैं कक्षा 5 की छात्रा हूँ। आज इस मंच पर खड़े होकर अपने कक्षा 1 से 5 तक के इस खूबसूरत सफर को याद करना मेरे लिए गर्व और भावुकता—दोनों का पल है। मुझे आज भी कक्षा 1 का वह पहला दिन याद है, जब मैं थोड़ी डरी हुई और थोड़ी उत्साहित होकर इस स्कूल में आई थी। सब कुछ नया था—नई किताबें, नई क्लास, नए दोस्त... लेकिन धीरे-धीरे यही सब मेरी दुनिया बन गया। इन पाँच वर्षों में हमारे शिक्षकों ने हमें सिर्फ किताबों का ज्ञान ही नहीं दिया, बल्कि सही-गलत की पहचान करना, अनुशासन में रहना और कभी हार न मानना भी सिखाया। अगर आज हम कुछ भी बन पाए हैं, तो उसमें हमारे गुरुओं का बहुत बड़ा योगदान है। स्कूल की प्रार्थना सभा में बैठ कर प्रार्थना करना, दोस्तों के साथ टिफिन शेयर करना, क्लास में हँसना-शरारत करना, और कभी-कभी टीचर से डाँट खाना—ये सारी छोटी-छोटी बातें आज बहुत बड़ी यादें बन गई हैं। खेल के मैदान में गिरकर फिर से उठना, हारकर भी मुस्कुराना—यही सबसे बड़ी सीख हमें यहाँ मिली है। ये स्कूल हमारे लिए सिर्फ पढ़ाई की जगह नहीं, बल्कि हमारा दूसरा घर रहा है। आज जब हम कक्षा 5 से आगे बढ़ रहे हैं, तो दिल में खुशी भी है और थोड़ी सी उदासी भी... क्योंकि अब ये पल, ये दोस्त और ये क्लास हमेशा के लिए यादों में बदल जाएंगे। अंत में, मैं अपने सभी शिक्षकगणों और इस विद्यालय का दिल से धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने हमें इतना प्यार दिया और हमें एक बेहतर इंसान बनने की राह दिखाई।और मैं आप सभी से यह वादा करती हूँ कि मैं अपनी आगे की शिक्षा और अच्छे से करूँगी और सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय का नाम रोशन करूँगी।

सानवी
पंचम 'ई'

आदरणीय प्रधानाचार्य जी, सम्मानित शिक्षकगण एवं मेरे प्यारे साथियों,

आज का दिन हमारे लिए बहुत भावुक है। हमें खुशी है कि हम एक नई उड़ान के लिए तैयार हैं। लेकिन दुख इस बात का है कि हम इस स्कूल में नहीं होंगे। आप लोगों ने हमें सिर्फ पढ़ाई नहीं बल्कि जीवन जीने का तरीका, दोस्ती और मुश्किलों में मुस्कुराना सिखाया है।

आज इस फेयरवेल स्पीच को देते हुए मेरे मन में कई यादें ताजा हो रही हैं। ऐसा लग रहा है जैसे कल की बात हो जब मैं पहली बार इस स्कूल में आई थी। आज जब मैं विदा ले रही हूं, तो यह स्कूल मेरे लिए सिर्फ एक इमारत नहीं, बल्कि मेरा दूसरा घर बन गया है।

मैं इस विद्यालय में कक्षा दो से पढ़ रही हूं। मेरे लिए यह स्कूल नहीं, एक मंदिर समान है, जहां मुझे अनुशासन, ज्ञान एवं संस्कार सिखाया गया। मैं अपनी सभी कक्षाध्यापिकाओं — अंजली मैम, सीमा मैम, रजनी मैम, नेहा मैम एवं मेरी अल्का मैम — जिन्होंने मुझे एक नई राह दिखाई और एक अच्छा इंसान बनाया, उन्हें धन्यवाद देना चाहती हूं।

मैं अपने सभी शिक्षकों को धन्यवाद देना चाहती हूं जिन्होंने मेरी गलतियों को सुधारा। यह विदाई एक अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है। आइए हम सभी यह संकल्प लें कि हम कभी हार नहीं मानेंगे और अपनी यादों के जरिए हमेशा जुड़े रहेंगे।

सृष्टि

पंचम 'फ'

मेरा नाम शशांक पाण्डेय है। मैं सरस्वती शिशु मंदिर में कक्षा पंचम (5वीं) में पढ़ता हूँ। मैं यहाँ कक्षा प्रथम से पंचम तक पढ़ता रहा हूँ। इन कक्षाओं में मेरा अनुभव इस प्रकार है:

यहाँ की सबसे अच्छी बात यह है कि यहाँ शिक्षा के साथ-साथ संस्कार भी सिखाए जाते हैं। अरुण से प्रथम कक्षा तक तो खेल-खेल में शिक्षा दी जाती है, और कक्षा द्वितीया से पंचम तक बहुत सी नई चीज़ें आती हैं, जैसे खेल प्रतियोगिताएँ, अलग-अलग परीक्षाएँ आदि। बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जो हमारे विद्यालय को अन्य विद्यालयों से अलग बनाती हैं।

यहाँ सिर्फ किताबों का ज्ञान ही नहीं दिया जाता इस ज्ञान को नैतिक जीवन से भी जोड़ा जाता है। यहाँ की कक्षाओं में स्मार्ट बोर्ड भी लगे हैं। और तो और, यहाँ ,दो संगीत कक्षा, एक शारीरिक कक्षा, दो कंप्यूटर कक्षा और एक पुस्तकालय है। विद्यालय का परिसर बहुत बड़ा है, फिर भी यहाँ का शुल्क बहुत कम है। यहाँ 'शिशु भारती' एक संगठन है, जो विद्यालय को अनुशासन में रखता है और विद्यालय की व्यवस्थाएँ देखता है। यहाँ के आचार्य और दीदी बहुत अच्छे हैं, वे बहुत अच्छे से ज्ञान प्रदान करते हैं। इस प्रकार रहा मेरा अनुभव इस विद्यालय में।

शशांक

पंचम 'फ'

चैत्र नवरात्रि व नववर्ष

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में वंदना सत्र में चैत्र नवरात्र एवं भारतीय नववर्ष का भव्य एवं प्रेरणादायी आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रातःकालीन वंदना सत्र की शुरुआत माँ सरस्वती व मां दुर्गा के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन के साथ हुई। वातावरण मंत्रोच्चारण, भक्ति गीतों और श्रद्धा से परिपूर्ण था। भैया-बहिनों ने सुस्वर में वंदना प्रस्तुत कर पूरे परिसर को भक्तिमय बना दिया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने अपने संबोधन में सभी भैया-बहिनों को नववर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए उन्हें अनुशासन, परिश्रम और संस्कारों के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि ऐसे पर्व हमें अपनी जड़ों से जोड़ते हैं और जीवन में नैतिक मूल्यों का संचार करते हैं।

AI Tool Training

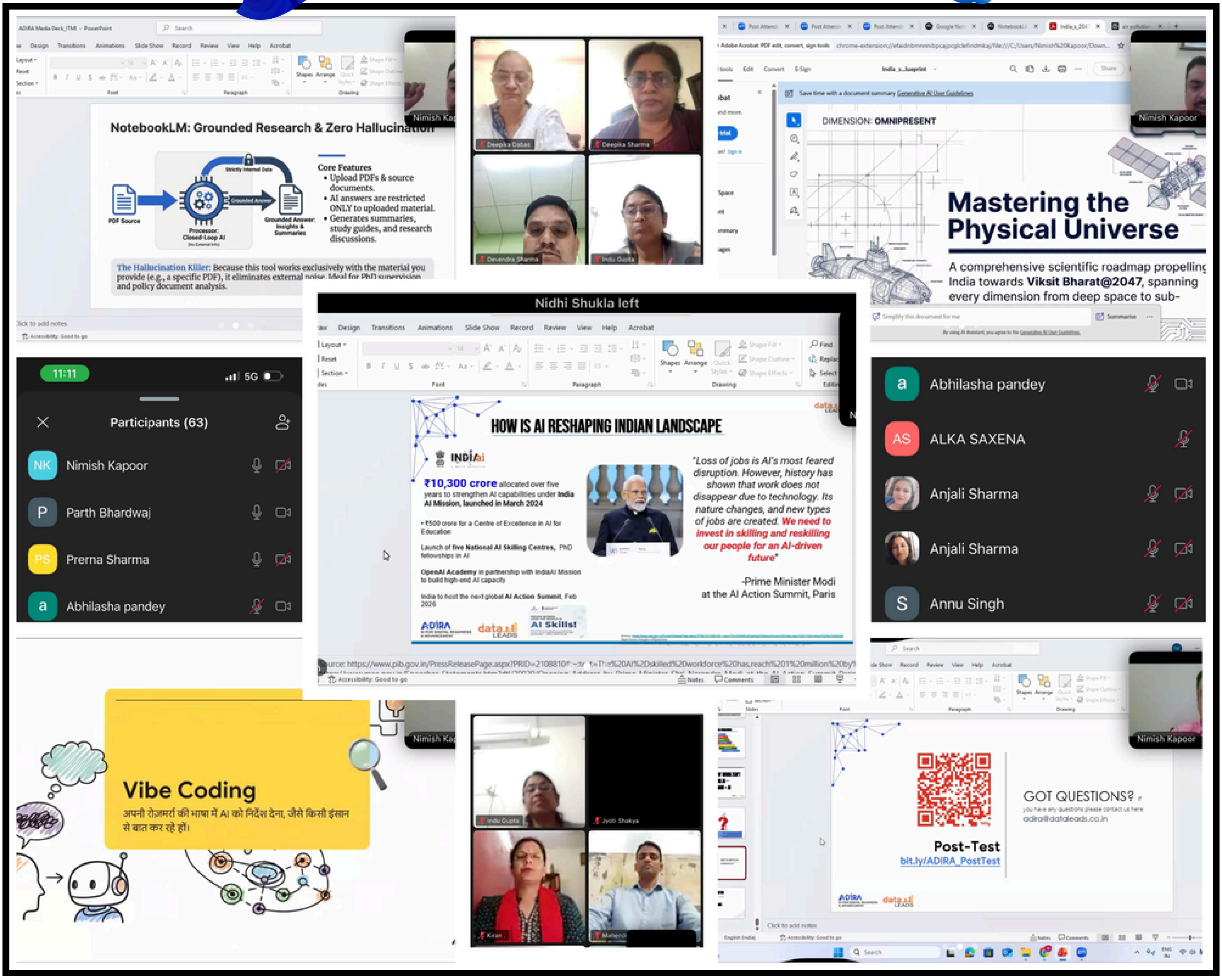

The school organized an effective AI tools training program for teachers to enhance their digital skills. Teachers learned how to use modern tools to make teaching more interactive and engaging. The training helped them save time and create better learning materials. It also encouraged innovative teaching methods in the classroom. Overall, the program was highly beneficial and inspiring for all teachers.

आशीर्वाद समारोह

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

सहयोग - भारत विकास परिषद
सरस्वती शिशु मंदिर
विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मंदिर

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
सरस्वती शिशु मंदिर

सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मंदिर

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
सरस्वती शिशु मंदिर

दिनांक 23/03/2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में कक्षा पंचम के भैया-बहिनों के लिए आशीर्वाद समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम अत्यंत गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित करना तथा उनकी शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम उपलब्धियों का सम्मान करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्रीमान प्रदीप गुप्ता जी, श्रीमान प्रताप मेहता जी, श्रीमान प्रदीप भारद्वाज जी, श्रीमान सोमगिरि जी द्वारा दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ, जिससे पूरे परिसर में एक आध्यात्मिक एवं प्रेरणादायक वातावरण निर्मित हो गया। विद्यालय के आचार्यगण एवं अतिथि वक्ताओं ने विद्यार्थियों को आशीर्वचन प्रदान करते हुए उन्हें जीवन में अनुशासन, परिश्रम और संस्कारों के महत्व से अवगत कराया। कक्षा पंचम के भैया-बहिनों ने भी अपने अनुभव साझा किए और विद्यालय में बिताए गए समय को स्मरण करते हुए भावुक क्षणों का अनुभव किया। इसके पश्चात विभिन्न प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले भैया-बहिनों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह सम्मान केवल पुरस्कार नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सतत प्रयास, समर्पण और लगन का प्रतीक है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्टता प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम का समापन मंगलकामनाओं एवं राष्ट्रगान के साथ हुआ। यह समारोह न केवल विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक रहा, बल्कि उनके जीवन में एक नई ऊर्जा एवं आत्मविश्वास का संचार करने वाला सिद्ध हुआ।

स्वर्ण प्राशन

दिनांक 28/03/2026 दिन- शनिवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के शिशु वाटिका में भैया/बहिनों को स्वर्ण प्राशन औषधि का सेवन करवाया गया। जिसमें विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने भगवान धन्वंतरि जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन किया। स्वर्ण प्राशन के सेवन से भैया/बहिनों का शारीरिक और मानसिक विकास बेहतर होता है और वे बीमारियों से बचे रहते हैं।

परीक्षा परिणाम व पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 28/03/2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा विद्यालय में सत्र 2025-26 के वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किए गए जिसमें कक्षा अरुण से पंचम तक के भैया-बहिनों को परीक्षा परिणाम दिया गया। वंदना सत्र में पुरस्कार वितरण के लिए आयोजित कार्यक्रम में कक्षा अरुण से पंचम तक के जिन भैया/बहिनों ने प्रथम, द्वितीय,तृतीय चतुर्थ एवं पंचम स्थान, शत प्रतिशत उपस्थिति, संस्कृति ज्ञान परीक्षा में स्थान प्राप्त करने वाले भैया-बहिनों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर अतिथि श्रीमान कपिल देव जी (प्रबंध समिति सदस्य) विद्यालय के सभी आचार्य/ आचार्या, अभिभावक बंधु और भैया/ बहिनों भी सम्मिलित रहे।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने भैया-बहिनों को संबोधित करते हुए कहा कि परीक्षा केवल अंकों का मूल्यांकन नहीं है, बल्कि यह हमारे प्रयास, अनुशासन और सीखने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग है। सफलता पाने वाले भैया-बहिनों को उन्होंने निरंतर परिश्रम और विनम्रता बनाए रखने की प्रेरणा दी। अंत में उन्होंने सभी भैया-बहिनों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

बताओ तो जानें

Find out the given words from the grid:-

ROCKET	PLANET	ASTRONAUT	MISSION
SKYLAB	TELESCOPE	GALAXY	GRAVITY
ECLIPSE			OXYGEN

R	O	C	K	E	T	A	K	K	K	K	T
G	C	X	V	B	A	S	N	M	G	Y	E
J	P	L	A	N	E	T	Y	J	K	L	L
K	R	G	Y	E	U	R	G	H	J	K	E
Y	T	R	U	C	I	O	V	B	N	M	S
S	R	A	Y	L	K	N	C	B	O	M	C
K	E	V	F	I	G	A	L	A	X	Y	O
Y	W	I	T	P	M	U	I	F	Y	J	P
L	W	T	R	S	D	T	P	K	G	L	E
A	D	Y	D	E	F	F	G	K	E	J	L
B	B	K	M	I	S	S	I	O	N	J	R

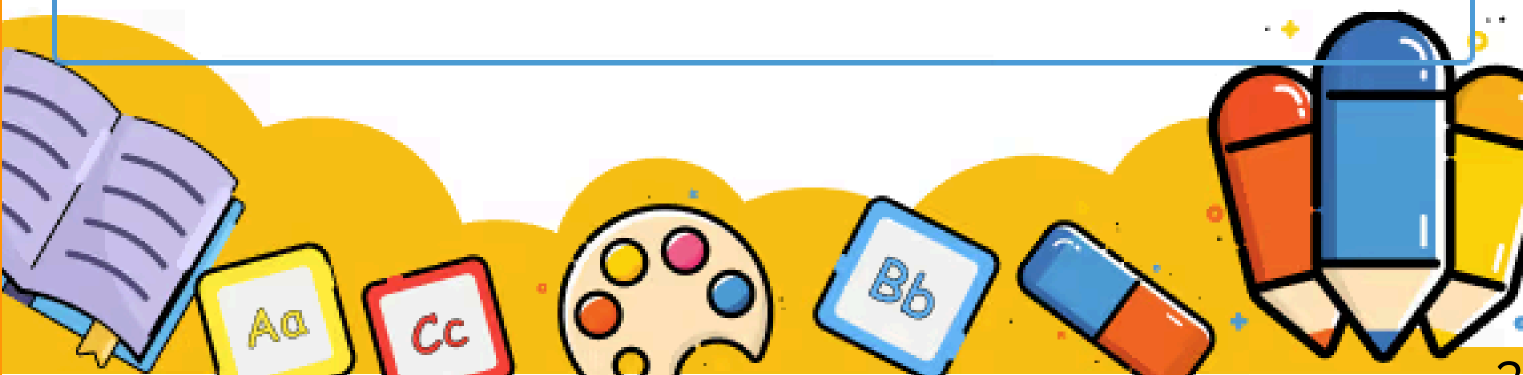

बताओ तो जानें

उदय से प्रभात तक के भैया-बहनों

Write the First Letter of the Given Picture

____

____

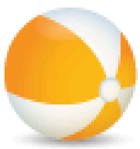 ____________

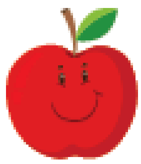 ____________

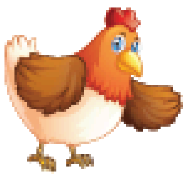 ____________

____

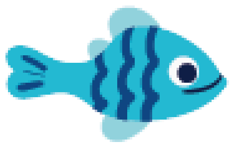 ____________

____

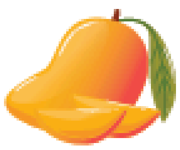 ____________

____

____

____

प्रश्नोत्तरी

1. पंचपदी शिक्षण पद्धति में कितने पद होते हैं?

2. सोमनाथ मंदिर का पुनः निर्माण किस सम्राट ने कराया?

3. हनुमान जी के माता पिता का क्या नाम था?

4. खालसा पंथ की स्थापना किसने की?

5. भारतीय संविधान के जनक कौन हैं?

6. जलियांवाला बाग हत्याकांड किस तिथि को हुआ?

7. विश्व धरोहर दिवस कब मनाया जाता है?

8. 22 अप्रैल को हम कौन सा दिवस मनाते हैं?

9. भगवान पशुराम के माता-पिता का क्या नाम था?

10. विश्व स्वास्थ्य दिवस कब मनाया जाता है?

आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान है अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे।
ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 32 व 33 में दिए प्रश्नों के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 15 अप्रैल 2026 तक भेजने होंगे।